अध्याय १८

मानवतावादी मनोविज्ञान
(HUMANISTIC PSYCHOLOGY)

अबतक मनोविज्ञान के जिन स्कूलों की चर्चा हुई है उनसे एक बात तो अवश्य स्पष्ट होती है कि इन स्कूलों ने 'सम्पूर्ण मनुष्य' का अध्ययन नहीं किया। प्राकृतिक विज्ञानों की पंक्ति में खड़े होने की लालसा में लगभग सभी स्कूलों ने यन्त्रवाद (mechanism), प्रत्यक्षवाद (positivism) और नियतिवाद (determinism) पर बल दिया, मनुष्य को पशुओं की शृंखला में ऊपर की कड़ी माना गया (डार्विन), मनुष्य को मशीन के समान माना गया (देकार्त), मनुष्य को असंख्य स्वाभाविक अथवा अनुकूलित प्रतिवर्तों (reflexes) का योगफल माना गया (वाट्सन), मनुष्य को कामवृत्ति से ओतप्रोत वासनाओं का पुलिन्दा माना गया (फ्रायड), इत्यादि। मनुष्य आदम (Adam) की औलाद है या कीड़े-मकोड़ों का वंशज, यह गुत्थी सुलझनेवाली प्रतीत नहीं होती है परन्तु इतना तो स्पष्ट है कि मनुष्य मनुष्य है जो उसके चूहे का बड़ा रूप कदापि नहीं है जबकि व्यवहारवादी दल के प्रयोगवादियों ने मनुष्य को चूहों के बड़े रूप से अधिक कुछ नहीं माना। मनुष्य की स्वाभाविक प्रकृतियों के विरुद्ध इंजील (The Bible) ने भी फैसला दे रखा था कि मनुष्य स्वभावतः बुरा होता है और इंजील द्वारा दीक्षित होने के बाद ही उसमें तथाकथित मानव गुण प्रवेश करते हैं। आधुनिक मनोविज्ञान तो पूर्णतः ईसाई-प्रधान यूरोप में जन्म लेकर अमरीका में फलने-फूलने चला गया। धीरे-धीरे इसकी लगाम बहुत कुछ यहूदी विद्वानों के हाथों में चली गई। मानव-स्वभाव के सम्बन्ध में पूर्वी धर्मों, जैसे सनातन धर्म, इस्लाम अथवा बुद्ध धर्म ने क्या कहा, इसपर पाश्चात्य मनोविज्ञानियों ने ध्यान नहीं दिया। कुरआन (The Quraan) में ईश्वर की घोषणा कि उसने मनुष्य को श्रेष्ठतम गुणों से भरकर बनाया और जब वह बुरे कर्म में लग जाता है तो उसे गहराइयों में गिरा दिया जाता है। सनातन विश्वास कि मनुष्य अपनी योग्यताओं को साधना के द्वारा विकसित कर ब्रह्म का ज्ञानी हो सकता है या बुद्ध का दावा कि मनुष्य निर्वाण प्राप्त कर सकता है, आदि बातें पाश्चात्य चिन्तकों के ध्यान-केन्द्र में नहीं आईं। प्रसिद्ध अमरीकी दार्शनिक एवं मनोविज्ञानी विलियम जेम्स की भेंट जब १८९३ ई० में स्वामी विवेकानन्द से हार्वर्ड में हुई तो उनकी आँखें खुल गईं कि मानव व्यक्ति में कितनी असीम क्षमताएं हैं, आवश्यकता केवल उन्हें विकसित करने की है।

जो मनोविज्ञान २०वीं शताब्दी के मध्य तक विकसित हुआ उसपर या तो व्यवहारवाद की छाप थी या फिर वह फ्रायडवाद के प्रभाव में था। व्यवहारवाद ने मनुष्य को बहुत-सारे प्रतिवर्तों (reflexes) का समूह माना और प्रत्येक प्रतिवर्त को एक उद्दीपन और एक अनुक्रिया का सम्बन्ध माना जिसमें मनुष्य की अपनी कोई भूमिका नहीं, केवल प्रतिवर्तों का एक भण्डार-घर। व्यवहारवादियों ने तो मनुष्य को इतना भी अधिकार नहीं दिया कि वह किसी प्रतिवर्त को अपनी इच्छा से रद्द या स्वीकार कर सके। इतना ही नहीं, मनुष्य की सच्चाई पर सन्देह करके इन लोगों ने मनुष्य की जगह चूहे पर विश्वास किया और उनपर किए गये प्रयोगों से प्राप्त निष्कर्षों को मनुष्य के लिए सच माना। व्यवहारवाद ने डार्विन के विकासवाद से

[illegible] और यह माना कि निम्न कोटि के प्राणी ही विकसित होकर मनुष्य हो गए हैं। यहाँ तक कोई आपत्ति नहीं है परन्तु व्यवहारवाद ने यह क्यों नहीं माना कि जिस प्रकार मनुष्य का शरीर चूहों से भिन्न हो गया है उसी प्रकार उसका स्वभाव और प्रकृति भी चूहों से भिन्न हो चुका है। यदि वे ऐसा मानते तो चूहों तथा अन्य निम्नस्तरीय प्राणियों को हाँकनेवाले डंडे से मनुष्य को नहीं हाँकते।

[illegible] ने भी मनुष्य को उसके वास्तविक स्थान से बहुत नीचे उतार कर देखा। इस विचार-तंत्र ने मनुष्य को दुश्चरित्र माना गया जिनकी मूल प्रवृत्ति पर अंकुश नहीं लगाया जाए तो वह न केवल सम्पूर्ण समाज को बल्कि अपने आपको भी नष्ट कर डालेगा। फ्रायड के अनुसार मनुष्य में जीवनाभिप्रेरक (life instinct) या विनाशाभिप्रेरक (death instinct) है। उनका जीवनाभिप्रेरक काम-भावनाओं से [illegible] है और विनाशाभिप्रेरक सभी प्रकार की विनाशकारी भावनाओं से। उन्होंने [illegible] मनुष्य को पाशविक प्रवृत्तियोंवाला माना जो अपनी माँ या निकट सम्बन्धियों से [illegible] सम्बन्ध जोड़ने (incest) का इच्छुक रहता है। फ्रायड ने मनुष्य पर [illegible] इन लक्षणों को जन्मजात माना। निश्चय ही फ्रायड ने मनुष्य के मूल स्वरूप को बड़ा घिनौना माना।

मानव-स्वरूप के सम्बन्ध में वाट्सन और फ्रायड के विचार बहुत प्रभावशाली रहे इसमें सन्देह नहीं, परन्तु चिन्तकों का एक दल मनुष्य को इतना तुच्छ, नीच [illegible] दिखाये जाने पर सन्तुष्ट नहीं था। मानव-प्रकृति के सम्बन्ध में फ्रायड-[illegible] और [illegible] दृष्टिकोण से असहमति बहुत दिनों से थी और बहुत लोगों [illegible] परन्तु वे इतनी अवकूल परम्पराओं के विरुद्ध आवाज बुलन्द करने का साहस [illegible] रहे थे। 1950 के बाद युगचेतना (zeitgeist) इतनी प्रबल हो [illegible] कि एक दल मनुष्य को पशुओं से भिन्न, मद भावनाओं से युक्त, अपने भीतर [illegible] सर्जनात्मक सम्भावनाओं (creative potentialities) से [illegible] [illegible] सिद्ध करने के लिए तैयार हो गया जिसका नेतृत्व अब्राहम हेरोल्ड मैस्लो (Abraham Harold Maslow) ने किया। मैस्लो और उनके दल ने अपने विचार-तंत्र को मानवतावादी मनोविज्ञान (Humanistic psychology) कहा और यह भी कहा कि यह नया स्कूल नहीं बल्कि उनका स्कूल स्कूलों को समाप्त करने के लिए है (a school to end school).

मानवतावादी मनोविज्ञान मनोविज्ञान का एक नया स्कूल है यद्यपि इसमें [illegible] स्कूल कहना उचित नहीं है। इस विचार-तंत्र को आन्दोलन-मात्र कहना अधिक उचित होगा। इस स्कूल ने [illegible] किसी भी स्कूल की यथार्थ विषय-वस्तु और क्रिया-[illegible] यह नहीं किया बल्कि यदि उनमें वैज्ञानिकता है तो उसका सम्मान किया। [illegible] इस स्कूल ने केवल इतनी माँग की कि मनुष्य के विस्तृत और कुशल मनोविज्ञान [illegible] का दुराग्रह नहीं होना चाहिए। उस समय तक के मनोविज्ञान में [illegible] को [illegible] प्रयोगों एवं [illegible] विधियों द्वारा [illegible] रहे थे। ऐसा मनोविज्ञान मनुष्य का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करने में असफल हो [illegible] है कि क्रिया-पद्धति (methodology) जितनी [illegible] होगी, उसके अध्ययन होनेवाला विषय उतना ही सरल, साधारण [illegible] होता जाएगा। 1950s तक के मनोविज्ञान का सर्वेक्षण करने के बाद Schultz, 1975) ने मनोविज्ञान के भविष्य पर टिप्पणी करते हुए यह प्रस्ताव

किया कि इसका भावी रूप मानवतावादी मनोविज्ञान होगा। मनुष्य जितना बाहर से दिखाई देता है उससे उसका बहुत अधिक भाग अप्रकट रहता है। प्रयोग तो केवल प्रकट का अध्ययन करता है, अतः प्रयोगात्मक विधि मनोविज्ञान की सीमा निर्धारित नहीं कर सकती है। धरती पर चलकर पृथ्वी का मानचित्र बनानेवाले समुद्रों और पहाड़ों का विवरण नहीं दे सकते हैं क्योंकि न तो वे समुद्र में तैर सकते हैं और न पहाड़ों पर चढ़ सकते हैं।

मानवतावादी मनोविज्ञान विकासवाद को स्वीकारते हुए मनुष्य और पशुओं के बीच सम्बन्ध मानता है परन्तु इसके साथ-साथ यह भी मानता है कि मनुष्य की कुछ अपनी विशिष्टताएँ हैं, उसमें आत्मपरकता (subjectivity) और आत्मतत्त्व (self-hood) है, उसे वर्तमान के साथ-साथ अतीत (past) और भविष्य (future) का भी बोध है, अर्थात् वह इतिहास (अतीत) द्वारा रचित भी है और भविष्य का स्वप्न देखनेवाला, अर्थात् भविष्य का निर्माता भी है, उसमें विविध प्रकार के मूल्य-तंत्र (value systems) बनाने की व्यापक प्रवृत्ति होती है जिनके आधार पर वह अपने को तथा दूसरों को तौलता रहता है, इत्यादि। यदि इन अकाट्य विशेषताओं वाले मनुष्य के सभी आयाम पर प्रयोगशाला अपना प्रकाश नहीं डाल सके तो मनोविज्ञानी अपने विषय (मनुष्य) को नहीं छोड़ेगा बल्कि प्रयोग को दिये गए महत्त्व पर संदेह करेगा। ऐसा संदेह करनेवाला मानवतावादी मनोविज्ञानी होगा जो यह मानता है कि मनुष्य तो एक स्वस्थ सर्जनात्मक व्यक्ति है जो कुछ लक्ष्यों एवं मूल्यों की खोज में लगा है आंतरिक संतुलन (homeostasis) प्राप्त करने के लिए नहीं, जैसा कि फ्रायडवादियों ने कहा, बल्कि फ्रौम और हॉर्नी के शब्दों में आत्मसिद्धि (self-realisation) प्राप्त करने के लिए, या मैस्लो और गोल्डस्टीन के शब्दों में आत्मकार्यान्वयन (self-actualisation) प्राप्त करने के लिए, या बुहलर (Buhler) के शब्दों में आत्मपरितोष (self-fulfilment) प्राप्त करने के लिए।

मानवतावादी मनोविज्ञान का आरम्भ बहुत थोड़े से समर्थकों के साथ हुआ परन्तु शीघ्र ही इसने एक बड़े आन्दोलन का रूप ले लिया। शुल्ज ने लिखा है कि 'यह दृष्टिकोण (मानवतावादी) अभी इतना नया और हलका है कि इसे मनोविज्ञान के इतिहास का अभिन्न अंग मानना कठिन है, फिर भी हम इसकी बढ़ती हुई शक्ति की उपेक्षा नहीं कर सकते हैं'।[1] इस नए दल ने मनोविज्ञान के द्विभाजित क्षेत्र—व्यवहारवाद और मनोविश्लेषणवाद, के बीच से एक नया क्षेत्र निकाला जिसे मैस्लो ने मनोविज्ञान की तीसरी शक्ति (third force in psychology) कहा। मानवतावादियों ने कहा कि व्यवहारवाद और मनोविश्लेषणवाद, दोनों ही मनुष्य का विकृत रूप प्रस्तुत करते रहे हैं। इन लोगों का विश्वास है कि व्यवहारवाद मनुष्य को समझने में संकीर्ण, अस्वाभाविक और अनुर्वर (sterile) है क्योंकि इसमें प्रकट व्यवहारों पर ही बल है जिससे मनुष्य एक बड़ा उजला चूहा या कुछ कम्प्यूटर-रूपी अमनुष्य होकर रह गया है। इनके अनुसार उद्दीपन-अनुक्रिया दृष्टिकोण (S-R approach) मानव प्रकृति का सर्वथा गलत नहीं तो अपूर्ण चित्र अवश्य देता है। मनुष्य के मूल स्वरूप को समझने में व्यवहारवाद पूर्णतः असफल हो चुका है, यह तो

1. "This approach (humanistic) is still too new and tenuous to be considered an integral part of the history of psychology, but we cannot ignore its growing strength."—Schultz, p. 371.

निर्विवाद है। व्यवहारवादियों के प्रयोगों ने मनुष्य को समझने में कोई सहायता नहीं की है, मानवतावादियों का ऐसा विश्वास है। मैसलो (1965) ने लिखा कि व्यवहारवादियों के प्रयोग बड़े सुन्दर अवश्य हैं परन्तु मानव स्वरूप से उनका कोई लगाव नहीं है।

मानवतावादियों ने ऐसी ही आपत्ति फ्रायडवाद पर लाई। मैसलो ने कहा कि फ्रायड ने तो केवल विकृत व्यक्तियों का अध्ययन किया, फिर उन्हें सामान्य मनुष्य पर टिप्पणी करने का अधिकार कैसे मिल गया? जिस प्रकार चूहों का अध्ययन करके व्यवहारवादियों ने मानव-स्वरूप पर टिप्पणी की उसी प्रकार न्यूरोसिस और साइकोसिस के रोगियों का अध्ययन करके फ्रायड ने मनुष्य पर टिप्पणी की जबकि दोनों में से किसी ने वास्तविक मनुष्य को देखा ही नहीं था। मैसलो (1954) ने फ्रायडवादी विचार पर टिप्पणी करते हुए कहा कि 'अपंग, अविकसित, अपरिपक्व और अस्वस्थ नमूनों के अध्ययन पर आधारित मनोविज्ञान और दर्शन भी अपंग ही होगा।'[1] व्यवहारवाद और मनोविश्लेषणवाद के द्वारा स्थापित इसी संकीर्ण, अमानविक, अनुर्वर अपंग मनोविज्ञान के विरुद्ध मैसलो और उनके समर्थकों ने विकल्प के रूप में एक तीसरी शक्ति (third force) के रूप में मानवतावादी मनोविज्ञान प्रस्तुत किया जिसकी विशेषताओं का वर्णन नीचे प्रस्तुत है।

व्यवहारवाद के एक नेता थे—वाट्सन, और मनोविश्लेषणवाद के एक नेता थे—फ्रायड। ये दोनों स्कूल अपने-अपने नेता के इशारे पर चलते थे। मानवतावादी मनोविज्ञान का कोई एक नेता नहीं है। इसके समर्थकों के बीच कुछ मतभेद भी हैं, फिर भी उद्देश्य की समानताएँ अधिक हैं। मानवतावादी मनोविज्ञान के अपने लक्षण क्या हैं यह कहना तो कुछ कठिन है परन्तु यह बताना अपेक्षाकृत सहज है कि यह मनोविज्ञान किन-किन बातों का विरोध करता है। मनोविज्ञान की यह तीसरी शक्ति एक वास्तविकता बन चुकी है, इसका पहला लक्षण यह है कि १९६१ ई० में 'जर्नल ऑफ ह्यूमनिस्टिक साइकोलॉजी' (Journal of Humanistic Psychology) का प्रकाशन आरम्भ हुआ, 'ह्यूमनिस्टिक साइकोलॉजी की अमरीकी समिति' (American Association for Humanistic Psychology) की स्थापना १९६५ ई० में हो गई जिसके पहले अध्यक्ष बुगेन्टल (Bugental) हुए और १९७१ ई० में 'अमरीकी मनोविज्ञान समिति का मानवतावादी मनोविज्ञान विभाग' (Division of Humanistic Psychology of American Psychological Association) स्थापित हो गया।

बुगेन्टल ने मानवतावादी मनोविज्ञान का परिचय कराते हुए लिखा कि इस मनोविज्ञान का उद्देश्य इस बात का पूर्ण विवरण देना है कि जीवित मनुष्य होने का अर्थ क्या है। ऐसे विवरण में मानव योग्यताओं की सूची देनी होगी, उसके भाव, चिन्तन और कार्य, उसकी वृद्धि, विकास और पतन, वातावरण के साथ उसकी परस्पर अन्तःक्रियाएं, उसके समस्त अनुभवों के प्रकार और विस्तार, और विश्व-व्यवस्था में उसके अस्तित्व की सार्थकता बतानी होगी। ऐसे सभी विषय जो केवल

1. "The study of crippled, stunted, immature and unhealthy specimens can yeild only a cripple psychology and a cripple philosophy."—Maslow.

मानव-अनुभव के लक्षण हैं मानवतावादी मनोविज्ञान के अन्तर्गत आते हैं, जैसे-प्रेम, घृणा, भय, आशा, सुख, स्नेह, जीवन का अर्थ, इत्यादि। चूंकि मानव जीवन के इन पक्षों की कार्यात्मक परिभाषा (operational definition) नहीं दी सकती है, इसका मात्रात्मक वर्णन नहीं हो सकता है, और इन पर प्रयोग नहीं हो सकते हैं, इसलिए पारम्परिक मनोविज्ञान में इनपर ध्यान नहीं दिया गया। मानवतावादी मनोविज्ञान ने इन मानव गुणों को अपना विषय बनाया। मानवतावादी मनोविज्ञान समिति ने इस मनोविज्ञान के चार मुख्य उद्देश्यों की चर्चा की—(i) अनुभव करनेवाले व्यक्ति (experiencing person) पर ध्यान केन्द्रित करना, अनुभव और व्यक्ति के लिए उस अनुभव के अर्थ पर बल देना (ii) मनुष्य के प्रति यंत्रवादी और लघुकरणवादी दृष्टिकोण को त्यागकर उसके विशिष्ट मानव गुण, जैसे चयन (choice), सृजन (creation), मूल्यांकन (valuation), आत्म-सिद्धि (self-realisation), आदि पर बल देना, (iii) अध्ययन के लिए सार्थक विषयों को चुनना और विषयों की वस्तुनिष्ठता की तुलना में उनकी जीवन-सार्थकता पर अधिक बल देना और (iv) मनुष्य के महत्त्व और सम्मान का आदर करना तथा प्रत्येक व्यक्ति में निहित उसकी योग्यताओं के विकास का प्रयास करना।

व्यवहारवाद ने अपने क्षेत्र से 'अनुभव' (experience) को सर्वथा निकाल फेंका था जबकि मानवतावादी मनोविज्ञान ने 'अनुभव' की महिमा स्वीकारते हुए उसे मनोविज्ञान में फिर से स्थापित किया। बुगेन्टल (1967) ने व्यवहारवाद और मानवतावादी मनोविज्ञान के बीच छः बिन्दुओं पर भेद बतलाया—

(i) मनुष्य 'बड़ा उजला चूहा' (larger white rat) नहीं है, अतः पशुओं पर किए गए अनुसन्धानों के आधार पर मानव-प्रक्रियाओं एवं अनुभवों को नहीं समझा जा सकता है।

(ii) मनोविज्ञान के अनुसन्धान-विषय इस आधार पर नहीं चुने जाएं कि उनपर प्रयोग सम्भव है बल्कि इस आधार पर चुने जाएं कि उनका महत्त्व मानव-अस्तित्व के लिए है।

(iii) मनोविज्ञान के अध्ययन केवल प्रकट व्यवहारों तक ही सीमित नहीं रखे जाएं बल्कि अधिक बल मनुष्य के आन्तरिक अनुभवों पर दिया जाए।

(iv) मनोविज्ञान को शुद्ध मनोविज्ञान (pure psychology) और व्यावहारिक मनोविज्ञान (applied psychology) के बनावटी क्षेत्रों में नहीं बाँटा जाए बल्कि दोनों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध बनाए रखा जाए क्योंकि दोनों के बीच अलगाव दोनों के लिए हानिकारक है।

(v) मनोविज्ञान यह माने कि प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में अपूर्व (unique) है, इसलिए अध्ययन व्यक्ति का होना चाहिए, न कि समूहों के औसत (average) का क्योंकि औसत तो एक संकल्पना है, वास्तविक व्यक्ति तो उससे हटा हुआ होता है।

(vi) मनोविज्ञान को उन बातों की खोज करनी चाहिए जो मानव अनुभवों को विस्तृत और समृद्ध करें।

मानवतावादी मनोविज्ञान के आधारिक सूत्र (basic tenets)

मानवतावादी मनोविज्ञान के उपर्युक्त वर्णन के आधार पर इसके कुछ आधारिक सूत्रों की ओर संकेत किया जा सकता है, यद्यपि इस वर्णन में पुनरावृत्ति के दोष भी मिलेंगे।

(i) मैस्लो ने कहा कि मानवतावादी मनोविज्ञान का बुनियादी पक्ष यह है कि वह प्रत्येक व्यक्ति का अध्ययन उसे एकीकृत (integrated), अपूर्व (unique) और संगठित समष्टि (organised whole) मानकर करता है। मैस्लो को इस बात का दुःख है कि पहले का मनोविज्ञान विश्लेषण पर बल देता रहा, मानो वृक्ष का अध्ययन हुआ और लोग जंगल को भूल गए। मानवतावादी मनोविज्ञान सम्पूर्ण व्यक्ति को अपना अध्ययन-विषय मानता है, उसके किसी पृथक पक्ष को नहीं। भूख व्यक्ति को लगती है, पेट को नहीं, अतः अध्ययन पेट का नहीं बल्कि व्यक्ति का होना चाहिए।

(ii) मानवतावादी मनोविज्ञान पशु-व्यवहार और मानव व्यवहार के बीच बड़ा भेद मानता है और विश्वास करता है कि मनुष्य पशु-मात्र से बहुत अधिक है। इस मनोविज्ञान ने विकासवाद को मानते हुए दावा किया कि मनुष्य सर्वथा भिन्न प्रकार का पशु है। व्यवहारवादियों से उनको शिकायत है कि इन लोगों ने मनुष्य को अमानवीय (dehumanise) कर दिया। इस आरोप के आधार पर मानवतावादियों ने मानव-स्वरूप समझने में पशु-अनुसन्धानों (animal researches) को व्यर्थ और अपायात्मक घोषित किया क्योंकि इन अनुसन्धानों में मनुष्य की अपूर्वताओं की अवहेलना की गई है। व्यवहारवादी चूहों, कबूतरों, बन्दरों और डॉल्फिन के वैज्ञानिक हो सकते हैं जबकि मानवतावादी मनुष्य के मनोविज्ञानी हैं।

(iii) मानवतावादी मनोविज्ञान का अटूट विश्वास इस बात पर है कि मनुष्य का मूल स्वरूप यदि अतिभद्र नहीं तो खराब भी नहीं है। इस विषय पर मानवतावादी सीधे फ्रायडवादी विचार से टकराते हुए दीख पड़ते हैं जिसके अनुसार मनुष्य जन्म से कामातुर और विनाशकारी होता है। मानवतावादी कहते हैं कि मनुष्य का जन्म तो अच्छी प्रकृतियों के साथ होता है परन्तु बुरे वातावरण और संगति के कारण उनमें दुष्टता, उग्रता और आक्रमणशीलता के लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं। अतः

इनके अनुसार दोषी मानव-प्रकृति नहीं बल्कि दूषित वातावरण है। फ्रायडवाद और मानवतावाद के बीच मनुष्य के मूल स्वरूप को लेकर बड़ा भेद है।

(iv) मानवतावादी मनोविज्ञान की प्रमुख विशेषता यह है कि इसने मनुष्य की सर्जनात्मकता (creativity) पर बल दिया है। मैसलो (1950) ने सर्वप्रथम इस बात की घोषणा की कि उनके मानव-अध्ययनों से यही सिद्ध होता है कि मनुष्य निर्विवाद रूप-से और बिना अपवाद जन्म के समय से ही सर्जनात्मक होता है, पेड़ पत्ते निकालते हैं, चिड़ियाँ उड़ती हैं, और मनुष्य सृजन (create) करता है। दूसरे शब्दों में, सर्जनात्मकता मानव जाति की अकाट्य विशेषता है। मैसलो यह भी मानते हैं कि व्यक्ति जैसे-जैसे संस्कृति के साँचों में ढलता है उनमें से अधिकांश की सर्जनात्मकता घट जाती है, परन्तु कुछ लोग अपने इस जन्मगत गुण को बचाए रखते है। मैसलो का यह भी विश्वास है कि सर्जनात्मकता प्राप्त करने के लिए किसी दूसरी योग्यता की आवश्यकता नहीं।

(v) मानवतावादी मनोविज्ञान का विश्वास है कि व्यापक सत्यता पर आधारित ठोस मनोविज्ञान की स्थापना के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ (psychologically healthy) और आत्मकार्यान्वयन (self-actualisation) की ओर बढ़ते हुए व्यक्तियों का अध्ययन होना चाहिए। मानवतावाद का यह सिद्धान्त स्पष्टतः फ्रायडवाद के विरुद्ध है जिसने मनोविज्ञान की स्थापना मनोरोगियों के अध्ययनों के आधार पर की। मैस्लो (1970) ने कहा कि मानसिक रोगियों के अध्ययन पर खड़ा किया गया मनोविज्ञान अस्वस्थ ही होगा। फ्रायडवाद का तो यह खुला दोष है कि जब मानसिक स्वास्थ्यवाले लोग बड़ी संख्या में उपलब्ध थे तो उन्होंने मानसिक रोगियों के आधार पर अपना मनोविज्ञान क्यों खड़ा किया।